13

अन्तिम भविष्य

(प्रकाशितवाक्य 21 व 22)

हमारा अध्ययन संसार और समय की दृष्टि की उत्पत्ति की पुस्तक के अनुसार आरम्भ हुआ था। ''फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों; और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षों के कारण हों'' (उत्पत्ति 1:14)। बाइबल के अनुसार समय का आरम्भ हुआ था; और बाइबल के अनुसार इसका अन्त भी होगा। कुछ धर्मों में पाए जाने वाले समय के विचार के विपरीत बाइबल का विचार है कि समय रेखाकार है यानी यह ''बिन्दु क'' से ''बिन्दु ख'' जाता है जिसका आरम्भ और अन्त दोनों हैं। यह इस अर्थ में गोलाकार नहीं है कि समय और तत्व नियतकाल में ''पुन: चालित'' हो जाते हैं। इसके विपरीत बाइबल के लेखक संसार के लिए सुसंगत विचार ''अपोकलिप्टिक'' विश्वदर्शन है यानी यह समझ है कि समय का न केवल अन्त होगा, बल्कि यह अन्त एक बड़े विध्वंस के साथ होगा।

वह अन्तिम क्षण यीशु की वापसी के समय आएगा। तब भौतिक संसार नष्ट हो जाएगा और हम अनन्काल में अस्तित्व के एक नये चरण का आरम्भ करेंगे। 2 पतरस 3:3-10 में पतरस ने कुछ संदेहवादियों के आरोपों का उत्तर दिया था कि ''जब से बाप दादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सृष्टि के आरम्भ में था'' (आयत 4)। अन्य शब्दों में अभी तक यह संकेत देने के लिए कि अन्त आएगा ऐसा कुछ नहीं हुआ था; जिस कारण वे तर्क देते थे कि अन्त नहीं आएगा। पतरस ने उन्हें याद दिलाया कि परमेश्वर ने एक बार पहले जल प्रलय में पृथ्वी को नष्ट किया था (उत्पत्ति 6; 7) और वह इसे एक बार फिर नष्ट कर सकता है और करेगा और इस बार इसका नष्ट किया जाना आग से होगा। फिर उसने अपने पाठकों को याद दिलाया कि ''प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं'' (आयत 9)। परमेश्वर के लिए समय अप्रासंगिक है यानी वह इससे बंधा नहीं है। पतरस ने यह बात कही थी, ''परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं [अचानक] आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे'' (3:10)। ''समय का अन्त'' आ रहा है।

यह ज़ोर देते हुए कि उसके आने के दिन या घड़ी को ''कोई नहीं जानता'' मत्ती 24:36-44 में यीशु ने इसी सच्चाई की पुष्टि की। उसने कहा कि ''सावधान होने'' और तैयार रहने की जिम्मेदारी हमारी अपनी है: ''इसलिए तुम भी तैयार हो, क्योंकि उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा'' (24:44)। उसके आने के समय की भविष्यवाणी करना असम्भव है (इसलिए ऐसा करने की कोशिश करके हम गलत होंगे); पर इसके लिए तैयार होना सम्भव है और यही हम में से हर किसी की जिम्मेदारी है।

कोई पूछ सकता है, ''पर, यदि सब कुछ नष्ट हो जाना है, तो परमेश्वर के लोगों के लिए भविष्य में क्या है?'' बाइबल इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर दिए बिना बन्द नहीं होती। प्रकाशितवाक्य

21 और 22 हमारे लिए ''अन्तिम भविष्य'' का वर्णन करते हैं, यानी केवल इतना ही नहीं कि भविष्यकाल में क्या होने वाला है, बल्कि यह भी कि समय के समाप्त होने अर्थात अनादिकाल में क्या होने वाला है। इन दोनों अध्यायों में यूहन्ना ने उस भविष्य के विवरण के लिए कई आकृतियों का इस्तेमाल किया है। उसने ''नया आकाश और नई पृथ्वी,'' ''पवित्र नगर नया यरूशलेम,'' ''दुल्हन'' आदि की बात की है। इनमें से हर आकृति उसके जिसे हम ''स्वर्ग'' कहते हैं इसी पहलू को दर्शाती है प्रकाशितवाक्य 21 और 22 पवित्र में पाए जाने वाले स्वर्ग का पूर्ण विवरण देते हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बाइबल इस प्रकार से समाप्त होती है। वचन का लक्ष्य विश्वासियों को पुन: आश्वस्त करना है, कि हमारे वर्तमान संघर्षों के बावजूद परमेश्वर ने हमारे लिए एक तेजस्वी भविष्य रखा है। यह विवरण हमें वहां जाने की इच्छा रखने को प्रोत्साहित करता है, चाहे इसकी जो भी कीमत हो या जो भी बलिदान हो।

''स्वर्ग'' क्या है?

क्या स्वर्ग कोई वास्तविक ''स्थान'' है या यह केवल अस्तित्व की मानसिक/आत्मिक स्थिति है? यदि यह एक स्थान है, तो कहां है? इन प्रश्नों का उत्तर दो कारणों से देना आसान नहीं है। (1) अनन्तकाल में समय और स्थान का अस्तित्व नहीं रहेगा। इसलिए यह जानना कठिन है कि स्वर्ग की ''स्थिति'' पर कैसे बात करें। (2) स्वर्ग के विषय में नये नियम के हमारे सभी वचन इसे अत्यन्त प्रतीकात्मक भाषा में बताते हैं। आखिर हमारे लिए परमेश्वर उसका विवरण जो हमारी समझ या कल्पना से कहीं बढ़कर है कैसे कर सकता था? यह वचन इतने प्रतीकात्मक हैं, इस कारण यह जानना कठिन है कि हमें किसी वचन को अक्षरश: लेना चाहिए या नहीं।

परन्तु प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में एक सच्चाई बड़ी साफ़ हो जाती है कि हम परमेश्वर पिता और पुत्र यीशु की उपस्थिति में सदा के लिए जाएंगे। प्रकाशितवाक्य 21:3 में यूहन्ना ने सिंहासन से एक ऊंची आवाज़ यह कहते हुए सुनी, ''... देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, ... और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा।'' स्वर्ग को महिमामय बनाने वाली बात यही है यानी हमारे सृष्टिकर्त्ता और छुड़ाने वाले की उपस्थिति में होना।

''नया यरूशलेम'' चाहे पवित्र नगर है, पर यूहन्ना ने वहां कोई मन्दिर नहीं देखा; क्योंकि ''सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ना उसका मन्दिर हैं। और उस नगर में सूर्य और चान्द के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है'' (21:22, 23)। बाद में 22:3-5 में यूहन्ना ने कहा कि पवित्र नगर में परमेश्वर के सेवक उसकी सेवा करेंगे, उसका चेहरा देखेंगे और अपने माथों पर उसके नाम को लिखाएंगे (स्वामित्व के चिह्न के रूप में) वह उनकी ज्योति होगा। ''स्वर्ग'' सदा तक परमेश्वर की उपस्थिति में होना है जिसने हमें बनाया और मसीह की उपस्थिति में जो हमें बचाने के लिए मर गया।

यूहन्ना 14:1-3 में यीशु ने स्वर्ग को ''मेरे पिता का घर'' कहा। अपने अनन्त निवास के लिए ऐसी सोच कितनी अच्छी है! उस घर में यीशु ने बताया कि उसने हमारे लिए अच्छी जगह तैयार की है। मत्ती 8:11 स्वर्ग के विवरण के लिए एक दावत के रूपक का इस्तेमाल करता है। यह विश्वास के बड़े-बड़े नायकों के साथ जो युगों से संसार में रहे और मर गए मेज़ पर बैठने

के रूप में जीवन के बाद की आशीष की यहूदी अवधारणा को दिखाता है। यीशु ने अन्तिम भोज के समय अपने चेलों को यही अवधारणा बताई थी कि वह ''जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में कुछ नया न पीऊं'' दोबारा दाख के रस में से नहीं पीएगा (मत्ती 26:29)। इस अर्थ में ''स्वर्ग'' का अर्थ परमेश्वर की मेज़बानी का आनन्द लेते हुए यीशु के साथ स्वर्गी मेज़ के गिर्द बैठना है। पिता के घर में होने और स्वर्गीय दावत के मेज़ के गिर्द बैठने के दोनों रूपक परमेश्वर की उपस्थिति में सदा तक होने की सुन्दर अभिव्यक्तियां हैं।

स्वर्ग कैसा है?

एक और प्रश्न स्वर्ग की प्रकृति से सरोकार रखता है। स्वर्ग पर बाइबल के सभी वचनों की समीक्षा भी हमारी जानकारी में बहुत गैप छोड़ देती है। ''क्या हम स्वर्ग में एक-दूसरे को जानते होंगे?''; ''क्या हम तब वैसे दिखेंगे जैसे अब दिखते हैं?'' ऐसे मामलों पर हमारी जिज्ञासा स्वाभाविक ही है, चाहे हमें इनका उत्तर मिले या न। प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में कम से कम हमें एक विवरण जितना तो देता है, जिससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि स्वर्ग कैसा होगा।

पहले तो स्वर्ग उस जीवन से अलग होगा, जिसे हम यहां पर जानते हैं। स्वर्ग में बिल्कुल नई बातें होंगी यानी वहां पृथ्वी के नियम लागू नहीं होंगे। यूहन्ना ने अपने दर्शन का विवरण ''एक नये आकाश और एक नई पृथ्वी'' (21:1) का वर्णन करते हुए आरम्भ किया। ''नया'' के लिए यूनानी भाषा में दो शब्द हैं। एक ''*chronos*'' (जिससे कालक्रम के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''*chronological*'' मिला है) का अर्थ ''समय के सम्बन्ध में नया'' यानी एक ही बात का हाल ही का संस्करण। यहां इस्तेमाल हुआ दूसरा शब्द ''*kainos*'' है जो किसी बिल्कुल नई चीज़ की बात करता है। यानी उसी बात के नये संस्करण की नहीं, बल्कि नई किस्म के आकाश और पृथ्वी के। इस पर उन बातों से और ज़ोर दिया गया है जिन्हें यूहन्ना ने कहा कि इस नये प्रबन्ध का भाग नहीं होंगी ''और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं'' (21:4)। अभी के लिए हम एक ऐसे अस्तित्व की कल्पना ही कर सकते हैं दुख और पीड़ा देने वाली सब बातों में से कोई नहीं रहेगी!

मुझे तब की घटना याद है जब मैं एक छोटा लड़का था और अपनी दादी के पास खेल रहा था, जो अपनी बाइबल पढ़ रही थी। तब मुझे पता नहीं था, पर वह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में से पढ़ रही थी। अचानक मैंने देखा कि उसके गालों पर से आंसू टपक रहे हैं। सहमा हुआ मैं भागकर उसके पास गया और पूछने लगा कि क्या हुआ है। ''कुछ नहीं,'' उसने उत्तर दिया। ''यूं ही स्वर्ग के बारे में पढ़ रही हूं और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकती।''

तब मुझे यह समझ नहीं थी कि वह क्या कह रही है, अब समझ है। मेरी दादी ने जीवन में बड़ा दुख पाया था। बड़ी छोटी उम्र में ही वह विधवा हो गई थी, बड़ी मंदी के दौरान अपने बच्चों का पालन पोषण किया था, और अपनी और अपने परिवार की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उसने बड़ी मेहनत की थी। उसका एक बेटा खो गया था जो कई साल तक मानसिक और शारीरिक बीमारियों से पीड़ित रहा था। कोई आश्चर्य नहीं कि वह स्वर्ग में जाने को तड़प रही थी! उस जगह में रहना जहां किसी हिंसा का डर न हो, भोजन या पानी की कमी न हो, बीमारी

का कोई नाम न हो, अपने प्रियजनों को अलविदा न कहना पड़े और शरीर में हो या मन में कोई गम्भीर दर्द न हो, कितना अद्‌भुत होगा! निश्चय ही यह पृथ्वी पर के जीवन से अलग होगा!

दूसरा, स्वर्ग सुन्दर होगा। 21:9-11 में यूहन्ना ने स्वर्ग को परमेश्वर की महिमा ''वाले नगर के रूप में दिखाया।'' उसने कहा, ''उसकी ज्योति बहुत ही बहुमोल पत्थर, अर्थात बिल्लौर के समान यशब की नाई स्वच्छ थी'' (आयत 11)। फिर उसने इसकी बड़ी शहरपनाह और इसके फाटकों का विवरण दिया जिनमें बड़े मोती जड़े थे (21:18-21)। ''स्वच्छ कांच के समान'' शुद्ध सोने की गलियों के बारे में बताया।

बेशक यह स्वर्ग का हू-ब-हू विवरण नहीं है, परन्तु यह किसी भी प्रकार से कम अद्‌भुत नहीं बनाता। हम इस पृथ्वी पर यहां प्रकृति के सुन्दर दृश्यों की कल्पना कर सकते हैं, पर वे उससे जो हम स्वर्ग में देखेंगे, मिलाने के योग्य बिल्कुल नहीं हैं। बेशक स्वर्ग की वास्तविक सुन्दरता इसमें है कि वहां *कौन* है। न कि इसमें कि वहां *क्या* है। स्वर्ग में हम ''परमेश्वर की महिमा'' में आनन्द लेकर। यह वह बात है जिससे सदियों से विश्वासी लोग देखने को तरसते हैं। भजन लिखने वाले ने लिखा है:

> एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं (भजन संहिता 27:4)।

''परमेश्वर आत्मा है'' (यूहन्ना 4:24), इस कारण हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि ''यहोवा की मनोहरता'' कैसी होगी, पर परमेश्वर के वचन की यह अद्‌भुत प्रतिज्ञा है कि हम ''उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2)। उसकी उपस्थिति स्वर्ग में अत्यधिक सुन्दर स्थान बना देगी।

तीसरा, स्वर्ग विशाल होगा। प्रकाशितवाक्य 21:15-17 पवित्र नगर के माप का विवरण एक स्वर्ग के सोने की छड़ी के इस्तेमाल के द्वारा देता है। यह कार्य स्पष्टतया यूहन्ना को नगर की लम्बाई चौड़ाई से यूहन्ना को प्रभावित करने के लिए था। पहले हमें पता चलता है कि नगर घनाकार है: ''और वह नगर चौकोर बसा हुआ था और उसकी लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी, ...'' (21:16)। फिर भी हम स्पष्टतया सांकेतिक के क्षेत्र में हैं और इस आकार का कोई स्पष्ट परिणाम नहीं। यरूशलेम वाले मन्दिर में, परम पवित्र स्थान (अति पवित्र स्थान) जहां वाचा का संदूक रखा गया था, घनाकार में था (1 राजाओं 6:20)। इसलिए परमेश्वर के निवास स्थान के लिए घन का आकार एक प्रभावशाली संकेत बन गया, और नया यरूशलेम यही है।

घन क्या है! यूहन्ना ने इसे ''12,000 स्टेडिया'' लम्बा, ऊंचा और चौड़ा बताया। स्टेडियम 600 फुट से अधिक होता था, जिस कारण इसका अर्थ यह है कि जो नगर यूहन्ना ने देखा वह 1400 मील लम्बा, चौड़ा और ऊंचा है! क्या इसके आकार से वास्तव में कोई फर्क पड़ता है, हां? क्योंकि यह संकेत देता है कि स्वर्ग में उन सब के लिए जो वहां जाना चाहते हैं काफ़ी जगह है। आखिर, यीशु ने कहा, ''मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं'' (यूहन्ना 14:2क)। कुछ लोग उस अनादि नगर को यह ज़ोर देते हुए कि स्वर्ग में केवल कुछ लोग ही प्रवेश करेंगे, ''सिकोड़ने'' की कोशिश में रहते हैं। लूका 13:23 एक अवसर की बात लिखता है जब एक

अपरिचित व्यक्ति यीशु के पास एक प्रश्न लेकर आया जो व्यावहारिकता के बजाय जिज्ञासा से बना था: ''हे प्रभु, क्या उद्धार पाने वाले थोड़े हैं?'' इस प्रश्न में उद्धार पाने वालों की संख्या पर यहूदी गुरुओं में पाई जाने वाली पुरानी बहस की झलक थी। यीशु ने उस व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर सीधे नहीं दिया, पर प्रकाशितवाक्य 21 निश्चित रूप से उसका उत्तर देता है कि ''नहीं!'' इसके विपरीत उद्धार पाने वाले लोग बहुत होंगे!

''परन्तु'' कोई पूछ सकता है मत्ती 7:13, 14 का क्या अर्थ है, यीशु ने कहा, ''सकेत फाटक से प्रवेश करो। क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक जो और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोडे हैं जो उसे पाते हैं।'' हमें यह समझना आवश्यक है कि उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि कुछ लोगों का ही उद्धार होगा; बल्कि यह है कि नाश होने वालों की संख्या की तुलना में उद्धार पाने वाले ''थोड़े'' ही होंगे। प्रकाशितवाक्य 7:9, 10 कहता है:

> इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए सिंहासन के साम्हने और मेम्ने के साम्हने खड़ी। और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, कि उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जयकार हो।

संदर्भ से यह स्पष्ट है कि असंख्य लोगों की भीड़ हर युग के उद्धार पाए हुए लोगों को यानी हर देश या भाषा के लोगों को दर्शाती है जिन्हें मेमने के लहू के द्वारा छुड़ाया गया है। उन सब के समाने के लिए स्वर्ग बहुत बड़ा होना आवश्यक है।

वास्तव में यीशु ने इस प्रश्न का कि ''क्या उद्धार पाने वाले थोड़े ही होंगे?'' उत्तर सीधे नहीं दिया। इसके बजाय उसने प्रश्न पूछने वाले से उससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान दिलाया: वे थोड़े हों या बहुत, पर क्या *वह* उनमें से होगा? ''सकेत फाटक से प्रवेश करने का यत्न करो,'' यीशु ने कहा, ''क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे'' (लूका 13:24)। अन्त में, इससे कोई तर्क नहीं पड़ता कि कितने लोग स्वर्ग में प्रवेश करते हैं। हम में से हर किसी का फर्क इस बात से पड़ता है कि हम यह सुनिश्चित जाने कि क्या हम उन में से हैं। हम यकीन जान सकते हैं कि हमारे लिए वहां बहुत जगह होगी। स्वर्ग में ''जगह नहीं है'' का बोर्ड देखकर कोई वापस नहीं आएगा।

चौथा, स्वर्ग सुरक्षित होगा। प्रकाशितवाक्य 21 में हमें इस सुरक्षा के कई संकेत मिलते हैं। उदाहरण के लिए आयतें 6 और 7 ज़ोर देती हैं कि स्वर्ग में रहने वालों के पास अपने परमेश्वर के रूप में ''अल्फा और उमेगा, आदि और अन्त'' होंगा। वह बिना कीमत लिए जीवन का जल निशुल्क देगा। सुरक्षा के इस विचार पर और ज़ोर देने के लिए आयत 12 कहती है कि नया यरूशलेम की ''शहरपनाह बड़ी ऊंची'' होगी और आयत 17 कहती है कि यह शहरपनाह ''144 हाथ'' ऊंची होगी (देखें ESV)! सभी प्राचीन नगरों की रक्षा की पहली पंक्ति के रूप में बड़ी बड़ी चारदीवारी होती थी। ऐसे युग में जब आप सामने की लड़ाई आम, बाहर के हमलावरों से

बचाव के लिए दीवार प्रभावकारी है। खतरे के समय में देहातों और गांवों के लोग नगर में भाग सकते थे और फाटक बन्द कर दिए जाते थे।

नये यरूशलेम की भी शहरपनाह बताई गई है, पर इसकी एक विशेष बात है। चाहे इसके बारह फाटक हैं पर वे फाटक कभी बन्द नहीं होते (आयत 25)। आम तौर पर नगर के फाटक दिन के समय आने जाने के लिए खुले रहते थे। रात को वे फाटक बन्द कर दिए जाते और हमलावर से सुरक्षा देने के लिए वहां पहरेदार बिठा दिए जाते। इसके विपरीत नये यरूशलेम में दिन के समय फाटक कभी बन्द नहीं होते, और रात तो वहां होती ही नहीं। क्यों? परमेश्वर और मेमने की उपस्थिति के कारण (आयतें 23, 24)। नये यरूशलेम की सुरक्षा पक्की है।

आज कइयों के लिए विशेषकर आतंकवाद और जैविक या न्यूक्लियर विनाश की धमकियों के कारण सुरक्षा कइयों के लिए एक बड़ी बात है। लोगों को हवाई अड्डों की सुरक्षा, अपनी और अपनी सम्पत्ति की अपराध से रक्षा और अपने काम की सुरक्षा की अधिक चिन्ता रहती है। सुरक्षा के लिए हम एहतियाती कदम उठाते और कई लोग तो काफ़ी खर्च करते हैं; पर पूर्ण रूप में सुरक्षा हमें कभी नहीं मिल पाती। नये यरूशलेम में जो तक जाने से पहले ऐसा कभी नहीं हो सकता। वहां हम एक बड़ी, ऊंची शहरपनाह में रहेंगे जिसके फाटक कभी बन्द नहीं होते। हमें सुरक्षा सारी सृष्टि के परमेश्वर के द्वारा और मेमने के द्वारा जो हमारे वहां होने को सम्भव बनाने के लिए मरा, दी जाएगी। कोई इससे बढ़कर और क्या मांग सकता है?

पांचवां, स्वर्ग सम्पूर्ण होगा। प्रकाशितवाक्य 22:1-5 में उस नगर का रूपक है जो एक बाग से मिला हुआ है, पर यह बाग ऐसा वैसा नहीं है। इस बाग में जाति-जाति के लोगों की चंगाई के लिए ''जीवन के जल की नदी'' और ''जीवन का वृक्ष'' हैं। ''और फिर स्राप न होगा और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। ... और वे युगानुयुग राज करेंगे'' (आयतें 3-5)। क्या यह जाना पहचाना सा लगता है? आयतें 1 से 5 उत्पत्ति 3 में दर्ज पाप में ''गिरने'' के पलटने का वर्णन करती थी। उस बाग में मनुष्य ने परमेश्वर के साथ अपने गूढ़ सम्बन्ध, अपनी सुरक्षा, और जीवन के वृक्ष तक अपनी पहुंच को खो दिया। सांप, पुरुष, स्त्री और यहां तक कि भूमि को भी ''स्राप'' दिया गया था। नये यरूशलेम में यह सब उलट जाएगा। उत्पत्ति 3 में हम ''स्वर्गलोक के खोने'' की बात पढ़ते हैं और प्रकाशितवाक्य 22 में हम ''स्वर्ग फिर से मिल जाने'' के बारे में पढ़ते हैं। स्वर्ग में हम परमेश्वर के साथ बिना रुकावट के संगति, अपने पापों की क्षमा और पूर्ण चंगाई का अनुभव लेंगे।

परमेश्वर हर चीज को जहां थी वहां अपने पास ले आएगा। इसमें हम भी होंगे!

वहां कौन होगा?

अब तक हम स्वर्ग के इतने व्यापक विवरण को देख चुके हैं, तो हमें पूछना पढ़ेगा, ''वहां जाने के योग्य कौन होगा?'' नये यरूशलेम में रहने और परमेश्वर के साथ बे-रोक-टोक संगति का आनन्द लेने का बड़ा सौभाग्य यानी अनन्तकाल की बड़ी आशीष किसे मिलेगी?

इसका उत्तर है कि स्वर्ग में हर कोई जा सकता है, पर हर कोई जाएगा नहीं। आम तौर पर कहा जाता है कि ''स्वर्ग तैयार लोगों के लिए तैयार की गई जगह है।'' अन्य शब्दों में, स्वर्ग में जाना संयोग से या गलती से नहीं होगा। ये उन्हीं के लिए है, जिन्होंने वहां जाने का मन बनाया

है और उस अनादि लक्ष्य को पाने के लिए अपने रास्ते में कोई रुकावट नहीं देना चाहता। हम कितने ''तैयार'' हैं ? मेम्ने अर्थात यीशु के पीछे चलकर और केवल उसकी के पीछे चलकर।

जिस प्रकार से स्वर्ग एक वास्तविकता है, वैसे ही नरक भी है। यूहन्ना ने केवल प्रकाशितवाक्य के अन्तिम दो पाठों पर ही निर्भरता नहीं दिखाइ, बल्कि उसने कई बार इसका उल्लेख किया। मसीहियत एक ''विश्ववादी'' धर्म नहीं है। क्योंकि बाइबल यह नहीं सिखाती कि हर किसी का उद्धार होगा। प्रकाशितवाक्य और शेष नये नियम में यही शिक्षा है कि यीशु को ठुकराने वालों को अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से अलग किया जाएगा। यूहन्ना ने लिखा:

> पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है (21:8)।
>
> और उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़ने वाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं (21:27)।
>
> धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। पर कुत्ते, और टोन्हें, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहने वाला, और गढ़ने वाला बाहर रहेगा (22:14, 15)।
>
> मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिसकी चरचा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा (22:18, 19)।

ये आयतें इस बात का उदाहरण देती हैं कि वे कैसे लोग होंगे जो स्वर्ग में नहीं जाएंगे। ये आयतें दुष्टतापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे लोगों के लिए चेतावनी और मेमने के पीछे चलने वालों के लिए प्रोत्साहन हैं। इस जीवन के विपरीत स्वर्ग भक्तिहीन लोगों की उपस्थिति से दूषित नहीं होगा।

हम में से हर किसी को अपनी पसन्द आप चुननी है। हमें ही निर्णय लेना है कि हम मसीह को समर्पित होकर स्वर्ग की आशिषें पाएंगे या अपने पापों के लिए उसके बलिदान को नकारकर सदा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से निकाले जाएंगे।

''और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले'' (22:17)। परमेश्वर अनन्त जीवन का खुला निमन्त्रण देता है और हमें भी तय करना है कि हम किसे स्वीकार करें या नहीं। इस जीवन में इसकी जो भी कीमत देनी पड़े, वह कम रहेगी। इस पर हमें परमेवश्र की प्रतिज्ञा दी गई है।

क्या हम समय के अन्त की भविष्यवाणी कर सकते हैं?

बाइबल के छात्र अक्सर मत्ती 24 अध्याय और इसके समानान्तर भागों को (मरकुस 13; लूका 21) पढ़ते और निष्कर्ष निकालते हैं। यीशु ''चिह्न'' बता रहा था जिससे संसार के अन्त की भविष्यवाणी हो सकती है। (बाइबल के कई संस्करणों में मत्ती 24 का आरम्भ ''युग के अन्त के चिह्न'' शीर्षक से होता है।) परन्तु उस तथ्य को ध्यान रखें जो यीशु ने कहा तो उसके आगमन के समय की भविष्यवाणी कोई नहीं कर सकता (मत्ती 24:36), इसलिए यह स्पष्ट रूप में गलत व्याख्या प्रतीत होती है। कम से कम पूरे अध्याय का स्पष्टतया यह विषय नहीं है।

वास्तव में मत्ती 24 अध्याय की पहली कुछ आयतें ध्यान से पढ़ने पर पता चलता है कि यीशु *मन्दिर के विनाश* पर पूछे गए चेलों के प्रश्न का पहले उत्तर दे रहा था। फिर उन्होंने यह भी पूछ लिया कि ''तेरे आने और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा?'' (आयत 3)। अन्य शब्दों में दो अलग-अलग प्रश्न पूछे गए थे ओर उनका उत्तर दिया गया था। यीशु ने यह आश्वासन देते हुए कि ''लड़ाइयां और लडाइयों की चर्चा'' इस बात का संकेत *नहीं* हैं कि अन्त आने वाला है, उसके आने की भविष्यवाणी करने की कोशिश करेंगे। (यह तो आयत 6 को आम तौर पर पाए जाने के ढंग से उलट है।) ''जगह जगह'' ''अकाल और भूकम्प'' (आयत 7) का आना ''अन्त'' का चिह्न नहीं होगा (आयत 6), बल्कि केवल ''जनने की पीड़ाओं का आरम्भ'' (आयत 8) ही होना था। आयत 15 से 28 में यीशु ने फिर ज़ोर दिया कि यरूशलेम पर चाहे विनाश और तबाही झेलनी पड़े, पर मसीही लोगों को इन घटनाओं को उसके स्पष्ट आगमन के चिह्नों के रूप में व्याख्या नहीं करनी चाहिए।

आयत 29 से, वह यरूशलेम के गिरने की अपनी चर्चा को संसार के अन्त पर कुछ टिप्पणियों के साथ मिला देता है। परन्तु उसने आगे कहा कि न वह और न स्वर्ग के दूत जानते हैं कि उस बड़े दिन का समय कब होगा। हमारी जिम्मेदारी यह भविष्यवाणी करने के लिए कि अन्त कब होगा, वचन का विश्लेषण करने की नहीं बल्कि उस दिन तक भक्तिपूर्ण जीवन बिताते रहने के लिए तैयार रहने की है, यह चाहे जब भी हो जाए (24:44-25:46)। 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-11 में इसी बात पर ज़ोर दिया गया है।

मृतक कहां है?

''जब हम मर जाते हैं तो क्या होता है?'' एक ऐसा प्रश्न है जिस पर बहुत चर्चा हुई है। क्या हम मरने पर (विश्वासी मसीही लोगों के रूप में) सीधे स्वर्ग में जाएंगे, या कोई ''बीच की स्थिति'' जैसी जगह है जिसमें हम पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करते हुए रहेंगे? स्वर्ग पर बाइबल के वचनों का प्रतीकात्मक होना इसे संक्षिप्त होना कठिन बना देता है।

परन्तु एक वचन जिसमें कोई प्रतीकात्मक भाषा नहीं दी गई यह संकेत देता हुआ प्रतीत होता है कि सीधे स्वर्ग में जाएं। फिलिप्पियों के नाम लिखते समय पौलुस प्रेरिताई की अपनी सेविकाई को पूरा करने के लिए शरीर में रहने की सम्भावना और मृत्यु में से अनन्त जीवन में जाने के विचार के बीच फंसा हुआ था ''मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं,'' उसने कहा। फिर उसने आगे कहा कि उसकी इच्छा है कि ''कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है'' (फिलिप्पियों 1:23)। स्पष्टतया पौलुस का मानना था कि मृत्यु मसीही व्यक्ति के

लिए प्रभु की उपस्थिति में जाने का मार्ग प्रशस्त करती है। ''स्वर्ग'' का अर्थ और चाहे जो हो, इसका अर्थ मसीह के साथ होना पक्का है, जो किसी भी और बात से ''अच्छा है।''

पौलुस की बात पश्चात्तापी डाकू से कही गई यीशु की बात से बड़ी अच्छी तरह मेल खाती है। जिसने यीशु से अपने राज्य में आने पर उसे ''स्मरण'' रखने को कहा था: ''... आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'' (लूका 23:42, 43)। फिर से, अनन्तकाल में आशीषित होने का अर्थ प्रभु की उपस्थिति में होना है। हमारा लक्ष्य किसी विशेष स्थान में होना उतना नहीं है जितना अपने सृष्टिकर्त्ता और अपने उद्धारकर्त्ता की उपस्थिति में होना है, वह चाहे जहां भी हो या जैसा भी हो अच्छा है। उसके साथ सदा तक रहना ही काफ़ी होगा।